02-01-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - तुम्हें आपस में बहुत-बहुत रूहानी स्नेह से रहना है, कभी भी मतभेद में नहीं आना है"

प्रश्नः- हर एक ब्राह्मण बच्चे को अपनी दिल से कौन सी बात पूछनी चाहिए?

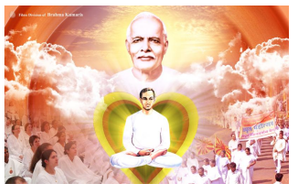

दिव्यगुणों का वर्गीकरण

ज्ञान	पवित्रता	शान्ति	सुख	प्रेम	आनन्द	शक्ति
धैर्यता	सभ्यता	शीतलता	ईमानदारी	नम्रता	उपराम	दृढ़ता
सत्यता	दिव्यता	निश्चिन्तता	परोपकार	मधुरता	साक्षीपन	निर्भयता
गम्भीरता	स्वच्छता	अन्तर्मुखता	उदारता	संतुष्टता	मिलनसार	अथक
दूरदर्शिता	शालीनता	वैराग्य	आज्ञाकारी	समर्पणता	शुभचिंतक	साहस
नियमित्ता	सादगी	अहिंसा	सम्पन्नता	सहनशीलता	शुभभावना	एकाग्रता
रमणीकता	रॉयल्टी	न्यारापन	दातापन	निरहंकारिता	निमित्त भाव	क्षमाशीलता
समदृष्टि	रूहानियत	एकान्तप्रिय	वफादार	रहम	हर्षितमुखता	हिम्मतवान

उत्तरः- अपनी दिल से पूछो - 1. मैं ईश्वर की दिल पर चढ़ा हुआ हूँ! 2. मेरे में दैवी गुणों की धारणा कहाँ तक है? 3. मैं ब्राह्मण ईश्वरीय सर्विस में बाधा तो नहीं डालता! 4. सदा क्षीरखण्ड रहता हूँ! हमारी आपस में एकमत है? 5. मैं सदा श्रीमत का पालन करता हूँ?

गीतः-भोलेनाथ से निराला.......

Click

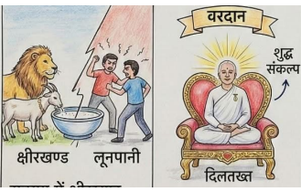

भोले नाथ से निराला,
गौरीनाथ से निराला, कोई और नहीं ।
ऐसा बिगड़ी बनाने वाला, कोई और नहीं ॥

उन का डमरू डम डम बोले,
अगम निगम के भेद खोले ।
ऐसा भक्तो का रखवाला कोई और नहीं ॥

काया जब जब करवट बदले,
पाप चमकते अगले पिछले ।
ऐसा जोत जगाने वाला कोई और नहीं ॥

तुमने जग का कष्ट मिटाया,
मुझ को स्वामी क्यों बिसराया ।
अब तो मुझे बचाने वाला कोई और नहीं ॥

ओम् शान्ति। तुम बच्चे हो ईश्वरीय सम्प्रदाय। आगे थे आसुरी सम्प्रदाय। आसुरी सम्प्रदाय को यह पता नहीं है कि भोलानाथ किसको कहा जाता है। यह

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

02-01-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

भी नहीं जानते कि शिव शंकर अलग-अलग हैं। वह शंकर देवता है, शिव बाप है। कुछ भी नहीं जानते हैं। अब तुम हो ईश्वरीय सम्प्रदाय अथवा ईश्वरीय फैमिली। वह है आसुरी फैमिली रावण की। कितना फ़र्क है। अभी तुम ईश्वरीय फैमिली में ईश्वर द्वारा सीख रहे हो कि एक दो में रूहानी प्यार कैसा होना चाहिए। एक दो में ब्राह्मण कुल में यह रूहानी प्यार यहाँ से भरना है। जिनका पूरा प्यार नहीं होगा तो पूरा पद भी नहीं पायेंगे। वहाँ तो है ही एक धर्म, एक राज्य। आपस में कोई झगड़ा नहीं होता। यहाँ तो राजाई है नहीं। ब्राह्मणों में भी देह-अभिमान होने कारण मतभेद में आ जाते हैं। ऐसे मतभेद में आने वाले सजायें खाकर फिर पास होंगे। फिर वहाँ एक धर्म में रहते हैं, तो वहाँ शान्ति रहती है। अब उस तरफ है आसुरी सम्प्रदाय वा आसुरी फैमिली-टाइप। यहाँ है ईश्वरीय फैमिली टाइप। भविष्य के लिए दैवीगुण धारण कर रहे हैं। बाप सर्वगुण सम्पन्न बनाते हैं। सब तो नहीं बनते हैं। जो श्रीमत पर चलते हैं वही विजय माला का दाना बनते हैं। जो नहीं बनेंगे वह प्रजा में आ जाते

How Great we are...!

हैं। वहाँ तो डीटी गवर्मेन्ट है। 100 परसेन्ट प्योरिटी, पीस, प्रासपर्टी रहती है। इस ब्राह्मण कुल में अभी दैवी-गुण धारण करने हैं। कोई तो अच्छी रीति दैवीगुण धारण करते, दूसरों को कराते रहते हैं। ईश्वरीय कुल का आपस में रूहानी स्नेह भी तब होगा जब देही-अभिमानी होंगे, इसलिए पुरुषार्थ करते रहते हैं। अन्त में भी सबकी अवस्था एकरस, एक जैसी तो नहीं हो सकती है। फिर सजायें खाकर पद भ्रष्ट हो पड़ेंगे। कम पद पा लेंगे।

ब्राह्मणों में भी अगर कोई आपस में क्षीरखण्ड होकर नहीं रहते हैं, आपस में लूनपानी हो रहते हैं, दैवीगुण धारण नहीं करते हैं तो ऊंच पद कैसे पा सकेंगे। लून-पानी होने के कारण कहाँ ईश्वरीय सर्विस में भी बाधा डालते रहते हैं। जिसका नतीजा क्या होता है वह इतना ऊंच पद नहीं पा सकते। एक तरफ पुरुषार्थ करते हैं क्षीरखण्ड होने का। दूसरी तरफ माया लूनपानी बना देती है, जिस कारण सर्विस बदले डिससर्विस करते हैं। बाप बैठ समझाते हैं तुम हो ईश्वरीय फैमिली। ईश्वर के साथ रहते भी हो। कोई साथ रहते हैं, कोई दूसरे-दूसरे

Simple Math..

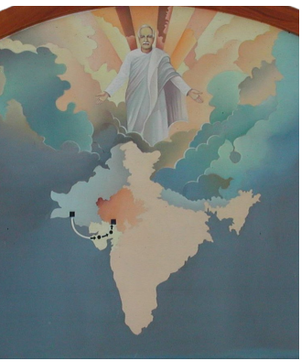

गाँव में रहते हैं परन्तु हो तो इकट्ठे ना। बाप भी भारत में आते हैं। मनुष्य यह नहीं जानते, शिवबाबा कब आते हैं, क्या आकर करते हैं? तुमको बाप द्वारा अभी परिचय मिला है। रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को अब तुम जानते हो। दुनिया को पता नहीं कि यह चक्र कैसे फिरता है, अभी कौन सा समय है, बिल्कुल घोर अन्धियारे में हैं।

Hence they are praying

ॐ असतो मा सद्गमय ।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतं गमय ।
Translation
From untruth, lead me to the truth;
From darkness, lead me to the light;
From death, lead me to immortality.
- Brihadaranyaka Upanishad

पूछते हैं अपने दिल से हम कितने महान है...
दुनिया जिसको ढूंढती हैं वह हम पर कुर्बान है

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

तुम बच्चों को रचता बाप ने आकर सारा समाचार सुनाया है। साथ-साथ समझाते हैं कि हे सालिग्रामों मुझे याद करो। यह शिवबाबा कहते हैं अपने बच्चों को। तुम पावन बनने चाहते हो ना। पुकारते आये हो। अभी मैं आया हूँ। शिवबाबा आते ही हैं - भारत को फिर से शिवालय बनाने, रावण ने वेश्यालय बनाया है। खुद ही गाते हैं कि हम पतित विशश हैं। भारत सतयुग में सम्पूर्ण निर्विकारी था। निर्विकारी देवताओं को विकारी मनुष्य पूजते हैं।

How Sweet...!

हाँ मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

बाबा आपको पाने की खुशी में मुझे ये पता नहीं चल रहा कि "मैं रोऊं या हंसू" क्योंकि बहुत लंबे समय के बाद मिले हो तो इस मिलन की खुशी में रोना आ रहा है और तुम्हारा साथ जो मिल गया है जिस कारण हंसना तो स्वाभाविक है।

तुम करुणा के सागर
तुम पालनकर्ता
स्वामी तुम पालनकर्ता
मैं मूरख खल कामी
मैं सेवक तुम स्वामी
कृपा करो भर्ता
ॐ जय जगदीश हरे

Points: योग ... रणा सेवा M.imp.

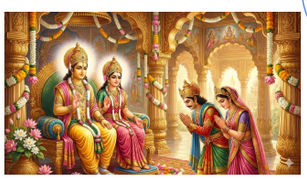

फिर निर्विकारी ही विकारी बनते हैं। यह किसको पता नहीं है। पूज्य तो निर्विकारी थे फिर पुजारी विकारी बने हैं तब तो बुलाते हैं हे पतित-पावन आओ, आकर निर्विकारी बनाओ। बाप कहते हैं यह अन्तिम जन्म तुम पवित्र बनो। मामेकम् याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायेंगे और तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान देवता बन जायेंगे फिर चन्द्रवंशी क्षत्रिय फैमिली-टाइप में आयेंगे। इस समय हो ईश्वरीय फैमिली-टाइप फिर दैवी फैमिली में 21 जन्म रहेंगे। इस ईश्वरीय फैमिली में तुम अन्तिम जन्म पास करते हो। इसमें तुमको पुरुषार्थ कर फिर सर्वगुण सम्पन्न बनना है। तुम पूज्य थे - बरोबर राज्य करते थे फिर पुजारी बने हो। यह समझाना पड़े ना। भगवान है बाप। हम उनके बच्चे हैं तो फैमिली हुई ना। गाते भी हैं तुम मात पिता हम बालक तेरे...तो फैमिली ठहरे ना। अब बाप से सुख घनेरे मिलते हैं। बाप कहते हैं तुम हमारी फैमिली बेशक हो। परन्तु ड्रामा प्लैन अनुसार रावण राज्य में आने के बाद फिर तुम दु:ख में आते हो तो पुकारते हो। इस समय तुम

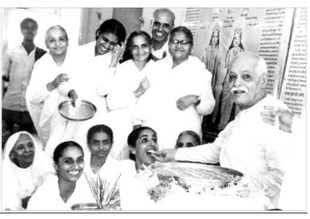

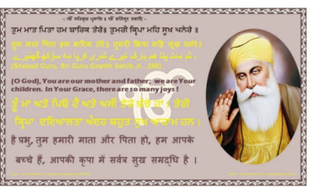

52. तुम मात-पिता हम बालक तेरे, तुम्हरी कृपा से सुख घनेरे। (गुरुग्रंथ साहब)
आप ही हमारे मात-पिता हो। हम आपकी सन्तान हैं। आपकी कृपा से हमें अपार सुख प्राप्त होता है। शिव बाबा अपने बच्चों को पढ़ाई पढ़ाते हैं यही उनकी कृपा है। ब्राह्मण बच्चों को ध्यान से पढ़ाई पढ़ना है और अपने आपको सौभाग्यशाली बनाना है।

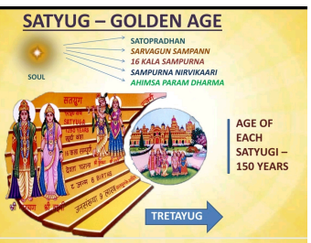

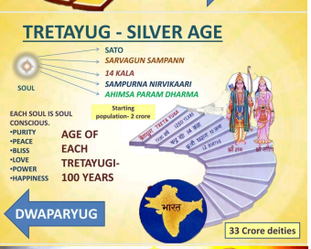

02-01-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

एक्यूरेट फैमिली हो। फिर तुमको भविष्य 21 जन्म लिए वर्सा देता हूँ। यह वर्सा फिर दैवी फैमिली में 21 जन्म कायम रहेगा। दैवी फैमिली सतयुग त्रेता तक चलती है। फिर रावण राज्य होने से भूल जाते हैं कि हम दैवी फैमिली के हैं। वाम मार्ग में जाने से आसुरी फैमिली हो जाती है। 63 जन्म सीढ़ी गिरते आये हो। यह सारी नॉलेज तुम्हारी बुद्धि में है। किसको भी तुम समझा सकते हो। असुल तुम देवी देवता धर्म के हो। सतयुग के आगे था कलियुग। संगम पर तुमको मनुष्य से देवता बनाया जाता है। बीच में है यह संगम। तुमको ब्राह्मण धर्म से फिर दैवी धर्म में ले आते हैं। समझाया जाता है लक्ष्मी-नारायण ने यह राज्य कैसे लिया। उनसे पहले आसुरी राज्य था फिर दैवी राज्य कब और कैसे हुआ। बाप कहते हैं कल्प-कल्प संगम पर आकर तुमको ब्राह्मण देवता क्षत्रिय धर्म में ले आते हैं। यह है भगवान की फैमिली। सब कहते हैं गॉड फादर। परन्तु बाप को न जानने के कारण निधन के बन गये हैं इसलिए बाप आते हैं घोर अन्धियारे से सोझरा करने। अब स्वर्ग स्थापन हो रहा है। तुम

ॐ असतो मा सद्गमय ।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतं गमय ।
Translation
From untruth, lead me to the truth;
From darkness, lead me to the light;
From death, lead me to immortality.
- Brihadaranyaka Upanishad

...oints योग धारणा सेवा M.imp.

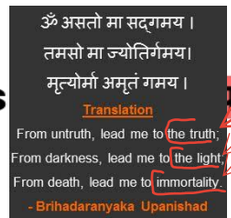

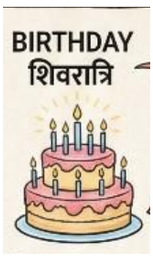

02-01-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

Maya
हिरण्यकश्यप को ब्रह्मा जी से ऐसा वरदान मिला था कि वह न तो किसी मनुष्य और न ही पशु द्वारा मारा जा सके। उसे न दिन में और न रात में, न घर के अंदर और न बाहर, न जमीन पर और न आकाश में, और न ही किसी अस्त्र-शस्त्र से मृत्यु हो सकेगी।

नर (ब्रह्मा) + सिंह (शिव)

Never underestimate the power of सेवा As 4th subject (It is equally important as ज्ञान, योग, धारणा)

बच्चे पढ़ रहे हो, दैवीगुण धारण कर रहे हो। यह भी मालूम होना चाहिए - शिव जयन्ती मनाते हैं, शिव जयन्ती के बाद फिर क्या होगा? जरूर दैवी राज्य की जयन्ती हुई होगी ना। हेविनली गॉड फादर हेविन की स्थापना करने हेविन में तो नहीं आयेंगे। कहते हैं मैं हेल और हेविन के बीच में संगम पर आता हूँ। शिवरात्रि कहते हैं ना। तो रात में मैं आता हूँ। यह तुम बच्चे समझ सकते हो। जो समझते हैं वह औरों को भी धारण कराते हैं। दिल पर भी वह चढ़ते हैं जो मन्सा-वाचा-कर्मणा सर्विस पर तत्पर रहते हैं। जैसी-जैसी सर्विस उतना दिल पर चढ़ते हैं। कोई आलराउन्ड वर्कर्स होते हैं। सब काम सीखना चाहिए। खाना पकाना, रोटी पकाना, बर्तन माँजना...यह भी सर्विस है ना। बाप की याद है फर्स्ट। उनकी याद से ही विकर्म विनाश होते हैं। यहाँ का वर्सा मिला हुआ है। वहाँ सर्वगुण सम्पन्न रहते हैं। यथा राजा रानी तथा प्रजा। दु:ख की बात नहीं होती। इस समय सब नर्कवासी हैं। सबकी उतरती कला है। फिर अभी चढ़ती कला होगी। बाप सबको दु:ख से छुड़ाए सुख में ले जाते हैं,

Simple Logic

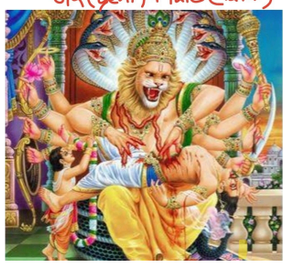

How lucky and Great we are...!

योग धारणा सेवा M.imp.

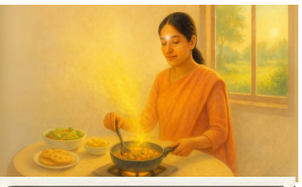

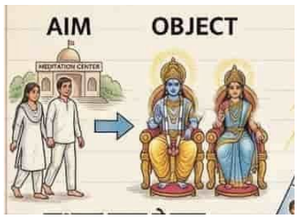

इसलिए बाप को लिबरेटर कहा जाता है। यहाँ तुमको नशा रहता है हम बाप से वर्सा ले रहे हैं, लायक बन रहे हैं। Definition of लायक तो उनको कहेंगे जो औरों को राजाई पद पाने लायक बनाते हैं। यह भी बाबा ने समझाया है पढ़ने वाले तो बहुत आयेंगे। ऐसे नहीं कि सब 84 जन्म लेंगे। जो थोड़ा पढ़ेंगे वह देरी से आयेंगे, तो जन्म भी कम होंगे ना। कोई 80, कोई 82, कौन जल्दी आते, कौन पीछे आते...सारा मदार पढ़ाई पर है। साधारण प्रजा पीछे आयेगी। उन्हों के 84 जन्म हो न सके। पीछे आते रहते हैं। जो बिल्कुल लास्ट में होगा वह त्रेता अन्त में आकर जन्म लेगा। फिर वाम-मार्ग में जाते हैं। उतरना शुरू हो जाता है। भारतवासियों ने कैसे 84 जन्म लिए हैं, उनकी यह सीढ़ी है। यह गोला है ड्रामा के रूप में। जो पावन थे वही अब पतित बने हैं फिर पावन देवता बनते हैं। मेरा बाबा बाप जब आते हैं तो सबका कल्याण होता है, इसलिए इसको आस्पीशियस युग कहा जाता है। बलिहारी बाप की है जो सबका कल्याण करते हैं। सतयुग में सबका कल्याण था, कोई दु:ख नहीं था, यह तो

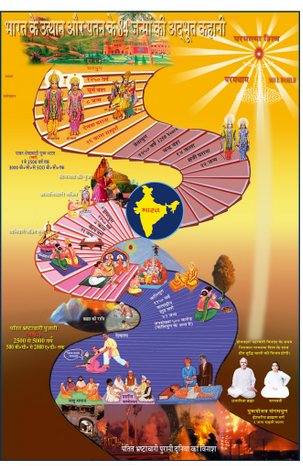

समझाना पड़े कि हम ईश्वरीय फैमिली-टाइप के हैं। ईश्वर सबका बाप है। यहाँ ही तुम मात-पिता गाते हो। वहाँ तो सिर्फ फादर कहा जाता है। यहाँ तुम बच्चों को माँ बाप मिलते हैं। यहाँ तुम बच्चों को एडाप्ट किया जाता है। फादर क्रियेटर है तो मदर भी होगी। नहीं तो क्रियेशन कैसे होगी। हेविनली गॉड फादर कैसे हेविन स्थापन करते हैं, यह न भारतवासी जानते हैं, न विलायत वाले ही जानते हैं। अभी तुम जानते हो नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया का विनाश, तो जरूर संगम पर ही होगा। अभी तुम संगम पर हो। अभी बाप समझाते हैं मामेकम् याद करो। आत्मा को याद करना है - परमपिता परमात्मा को। आत्मायें और परमात्मा अलग रहे बहुकाल...सुन्दर मेला कहाँ होगा! सुन्दर मेला जरूर यहाँ ही होगा। परमात्मा बाप यहाँ आते हैं, इसको कहा जाता है कल्याणकारी सुन्दर मेला। जीवनमुक्ति का वर्सा सबको देते हैं। जीवनबन्ध से छूट जाते हैं। शान्तिधाम तो सब जायेंगे - फिर जब आते हैं तो सतोप्रधान रहते हैं। धर्म स्थापन अर्थ आते हैं। नीचे

आत्मा परमात्मा अलग रहे बहुकाल, सुन्दर मेला कर दिया जब सतगुरु मिला दलाल।
आत्मा और परमात्मा बहुत काल से (सतयुग से कलियुग अन्त तक) अलग रहे। अब सतगुरु परमात्मा शिव धरती पर आकर आत्माओं से मिलन मनाते हैं। आत्मा परमात्मा से अलग हुए 5000 वर्ष हुए। अब आत्मा का परमात्मा के साथ इस संगमयुग पर जो सुन्दर मिलन मेला होता है, वह ब्रह्माबाबा दलाल के माध्यम से होता है।

जब उनकी जनसंख्या बढ़े तब राजाई के लिए पुरुषार्थ करें तब तक कोई झगड़ा आदि नहीं रहता। सतोप्रधान से रजो में जब आते हैं तब लड़ाई झगड़ा शुरू करते हैं। पहले सुख फिर दु:ख। अब बिल्कुल ही दुर्गति को पाये हुए हैं। इस कलियुगी दुनिया का विनाश फिर सतयुगी दुनिया की स्थापना होनी है। विष्णुपुरी की स्थापना कर रहे हैं ब्रह्मा द्वारा। जो जैसा पुरुषार्थ करते हैं उस अनुसार विष्णुपुरी में आकर प्रालब्ध पाते हैं। यह समझने की बहुत अच्छी-अच्छी बातें हैं। इस समय तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए कि हम ईश्वर से भविष्य 21 जन्मों का वर्सा पा रहे हैं। जितना पुरुषार्थ कर अपने को एक्यूरेट बनायेंगे...तुम्हें एक्यूरेट बनना है। घड़ी भी लीवर और सलेन्डर होती है ना। लीवर बहुत एक्यूरेट होती है। बच्चों में कई एक्यूरेट बन जाते हैं। कई अनएक्यूरेट हो जाते हैं तो कम पद हो जाता है। पुरुषार्थ करके एक्यूरेट बनना चाहिए। अभी सब एक्यूरेट नहीं चलते। तदबीर कराने वाला तो एक ही बाप है। तकदीर बनाने के पुरुषार्थ में कमी है

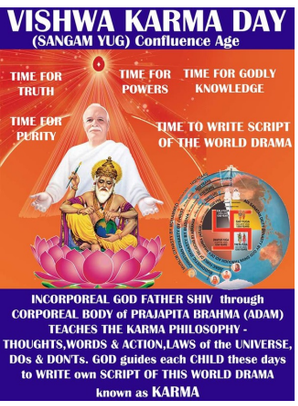

कापारी खुशी

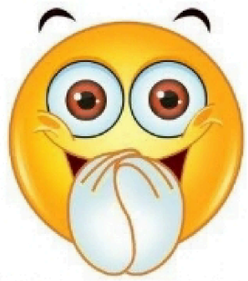

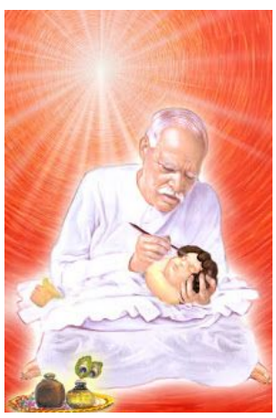

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Here is the problem

Here is the fault

इसलिए पद कम पाते हैं। (1) श्रीमत पर न चलने के कारण (2) आसुरी गुण न छोड़ने कारण, (3) योग में न रहने कारण यह सब होता है। योग में नहीं हैं तो फिर जैसे पण्डित। योग कम है इसलिए शिवबाबा तरफ लव नहीं रहता। धारणा भी कम होती है, वह खुशी नहीं रहती। शक्ल ही जैसे मुर्दो मिसल रहती है। तुम्हारे फीचर्स तो सदैव हर्षित रहने चाहिए। जैसे देवताओं के होते हैं। बाप तुमको कितना वर्सा देते हैं। कोई गरीब का बच्चा साहूकार के पास जाये तो उनको कितनी खुशी होगी। तुम बहुत गरीब थे। अब बाप ने एडाप्ट किया है तो खुशी होनी चाहिए। हम ईश्वरीय सम्प्रदाय के बने हैं। परन्तु तकदीर में नहीं है तो क्या किया जा सकता है। पद भ्रष्ट हो जाता है। पटरानी बनते नहीं। बाप आते ही हैं पटरानी बनाने। तुम बच्चे किसको भी समझा सकते हो कि ब्रह्मा विष्णु शंकर तीनों हैं शिव के बच्चे। भारत को फिर से स्वर्ग बनाते हैं ब्रह्मा द्वारा। शंकर द्वारा पुरानी दुनिया का विनाश होता है, भारत में ही बाकी थोड़े बचते हैं। Actually प्रलय तो होती नहीं, परन्तु बहुत खलास हो जाते हैं तो

समझा?

वाह मेरे भाग्य ...!
मुजे मिले भगवन..

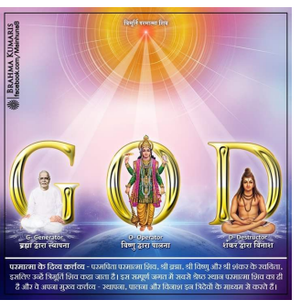

From 800 crore++ to 9 lakh only

जैसेकि प्रलय हो जाती है। रात दिन का फ़र्क पड़ जाता है। वह सब मुक्तिधाम में चले जायेंगे। यह पतित-पावन बाप का ही काम है। बाप कहते हैं देही-अभिमानी बनो। नहीं तो पुराने संबंधी याद पड़ते रहते हैं। छोड़ा भी है फिर भी बुद्धि जाती रहती है। नष्टोमोहा हैं नहीं, इसको व्यभिचारी याद कहा जाता है। सद्गति को पा न सकें क्योंकि दुर्गति वालों को याद करते रहते हैं। अच्छा!

Point to be Noted

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

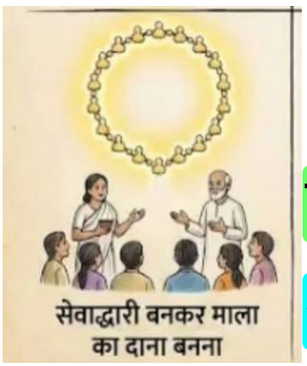

1) बापदादा की दिल पर चढ़ने के लिए मन्सा-वाचा-कर्मणा सेवा करनी है। एक्यूरेट और आलराउन्डर बनना है।

2) ऐसा देही-अभिमानी बनना है जो कोई भी पुराने सम्बन्धी याद न आयें। आपस में बहुत-बहुत रूहानी प्यार से रहना है, लूनपानी नहीं होना है।

वरदान:- विश्व परिवर्तन के श्रेष्ठ कार्य में अपनी अंगुली देने वाले महान सो निर्माण भव

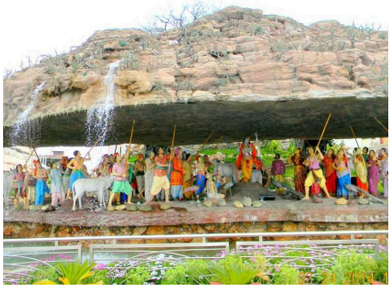

जैसे कोई स्थूल चीज़ बनाते हैं तो उसमें सब चीजें डालते हैं, कोई साधारण मीठा या नमक भी कम हो तो बढ़िया चीज़ भी खाने योग्य नहीं बन सकती।

ऐसे ही विश्व परिवर्तन के इस श्रेष्ठ कार्य के लिए हर एक रत्न की आवश्यकता है। सबकी अंगुली चाहिए।

सब अपनी-अपनी रीति से बहुत-बहुत आवश्यक, श्रेष्ठ महारथी हैं इसलिए अपने कार्य की श्रेष्ठता के मूल्य को जानो, सब महान आत्मायें हो। लेकिन जितने महान हो उतने निर्माण भी बनो।

स्लोगन:- अपनी नेचर को इज़ी (सरल) बनाओ तो सब कार्य इज़ी हो जायेंगे।

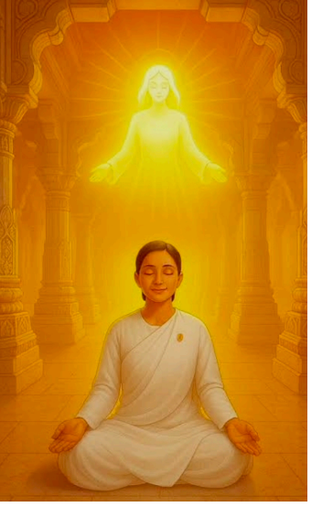

अव्यक्त इशारे - इस अव्यक्ति मास में

बन्धनमुक्त रह जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करो

जीवन में रहते, समय नाज़ुक होते, परिस्थितियाँ, समस्यायें, वायुमण्डल डबल दूषित होते हुए भी उसके प्रभाव से मुक्त, जीवन में रहते इन सर्व भिन्न -भिन्न बन्धनों से मुक्त रहना है।

एक भी सूक्ष्म बन्धन नहीं हो। ऐसा हर एक ब्राह्मण बच्चे को बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त बनना है। संगमयुग पर ही इस जीवनमुक्त स्थिति की प्रालब्ध का अनुभव करना है।

Call of time/समय की पुकार

41

अभी सभी हद की बातों से ऊँचे हो जाओ। हद की बातों में, हद के संस्कारों में समय नहीं गँवाओ। बापदादा आज भी सभी बच्चों को, चाहे यहाँ बैठे हैं, चाहे सेन्टरर्स पर बैठे हैं, चाहे देश में हो, चाहे विदेश में हैं लेकिन रहमदिल भावना से इशारा दे रहे हैं - बापदादा हर बच्चे की हद की बातें, हद के स्वभाव-संस्कार, नटखट वा चतुराई के संस्कार, अलबेलेपन के संस्कार बहुत समय से देख रहे हैं, कई बच्चे समझते हैं सब चल रहा है, कौन देखता है, कौन जानता है लेकिन अभी तक बापदादा रहमदिल है, इसलिए देखते हुए भी, सुनते हुए भी रहम कर रहा है। लेकिन बापदादा पूछते हैं आखिर भी रहमदिल कब तक? कब तक? क्या और टाइम चाहिए? बाप से समय भी पूछता है,

आखिर कब तक? प्रकृति भी पूछती है। जवाब दो आप। जवाब दो। अभी तो सिर्फ बाप का रूप चल रहा है, शिक्षक और सतगुरु तो है ही। लेकिन धर्मराज का पार्ट तो चला तो? क्या करेंगे? बापदादा यही चाहते हैं कि धर्मराज के पार्ट में भी वाह! बच्चे वाह! का आवाज कानों में गूँजे। फिर बाप को उलहना नहीं

May I have your Attention Please..!

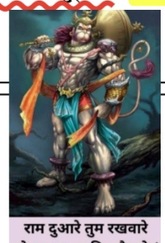

Attention Please..!

देना। बाबा, आपने सुनाया नहीं, हम तैयार हो जाते थे ना! इसलिए अभी हद की छोटी-छोटी बातों में, स्वभाव में, संस्कार में समय नहीं गँवाओ। चल रहे हैं, चलता है, नहीं। इसलिए इस द्रढ़ संकल्प का दिल में दीप जगाओ। हद से बेहद वृत्ति, दृष्टि, कृति बनानी ही है। इसलिए बापदादा कहते हैं बनानी पड़ेगी। आज यह कह रहे हैं बनानी पड़गी फिर क्या कहेंगे? टू लेट! समय को देखो, सेवा को देखो, सेवा बढ़ रही हैं, समय आगे दौड रहा है। लेकिन स्वयं हद में हैं या बेदह में हैं? हद की बातों के पीछे आप नहीं दौड़ो। तो बेहद की वृत्ति स्वमान की स्थिति आपके पीछे दौड़ेगी।

m.m.m....imp.

01/01/2026

(04-11-2001)

10.2 दुविधाओं का समाधान :

विशेष अमृतवेले रिफ्रेश हो ऐसे समझो – बाबा से पूछने जा रहे हैं। इस याद में रह कर फिर देखो रेसपाण्ड मिलता है। यह अनुभव अभी तक नहीं किया है। जैसे यहाँ साकार में कोई बात पूछने के लिए फौरन भाग आते हो। वैसे अव्यक्त को अपने नज़दीक लाओ तो ऐसी ही महसूसता हो सकती है। जैसे साकार में सहज बुद्धि में निर्णय हो जाता था ऐसे ही अव्यक्त बापदादा के साथ अनुभव होगा। अभी तक अव्यक्त रूप के इतने अनुभव नहीं किये हैं। केवल एक या दो बार पुरुषार्थ करने से आप ऐसे अनुभव कर सकेंगे। बहुत काल का अभ्यास करते-करते फिर नेचुरल हो जाता

समझा?

1|1|26

है। लेकिन अभी इस बात की कमी है।